कविता

शशि प्रकाश

युनाम

जानते थे हम
एक दिन हमें पीछे हटना होगा।
हम अभी कमजोर हैं,
बहुत अधिक कमजोर,
ब्यूनस आयर्स और मेक्सिको सिटी
और वाशिंगटन डी.सी. की हत्यारी शक्ति के आगे।
इसलिए, आओ हत्यारो,
यह समय तुम्हारा है।
अभी पारी तुम्हारी है।
आओ,
कंटीले तारों, संगीनों,
शिकारी कुत्तों, सिक्कों और बलात्कारी पौरुष के साथ
और कहो
अपने विद्वान तुंदियल मकड़ों से
पाण्डित्य के बारीक नीले धागों से
जाला बुनने के लिए,
नकली गरिमा भरे भारी-भरकम शब्दों से
ओस और आंसू सने पंखों को
कुचल देने के निर्देश दे दो
हाथों में कलम साधे जल्लादों को,
दीमकों से कहो, वे फिर से
हमारी आत्माओं में घुसकर
अपना काम शुरू कर दें।
हमारा 'युनाम'
हम दो लाख सत्तर हजार युवाओं का 'युनाम'
अब फिर तुम्हारा है।
पर याद रखना
हमारे कब्जे के नौ माह,
हमारी इस लड़ाई ने
धारण किया गर्भ में
फिर से एक विचार, एक स्वप्न।
उसे तुम मार नहीं सकते।
जैसे पहाड़ों में जीवित है
जपाटिस्टा आग,
वैसे ही यह हमारे दिलों में
सुलगता रहेगा।
ट्रेड यूनियनों के मददगार साथियो,
जांबाज जपाटिस्टा कामरेडो,
शुक्रिया नहीं कहेंगे तुम्हें,
कहेंगे, 'संघर्ष जिन्दाबाद'
इक्कीसवीं सदी के जलते मेक्सिको में।
हम जानते हैं कि
हमने लड़ाई में गलतियां भी कीं
नासमझी भरी, बचकानी, युवा-सुलभ,
पर हमने सीखा।
यह सीखने
और याद करने की एक छोटी-सी लड़ाई थी।
हमने पाया कि
हमें भूला नहीं है 2 अक्टूबर 1968 का दिन,[1]
न गलियों में बहता वह लहू, न संगीनें,
न धुआं, न राख।
हमने पाया कि
हम लड़ सकते हैं
और यह भी कि
लोग हमारे साथ हैं।
शुक्रिया पिताओ और माताओ
कि आंसू जज्ब करते हुए
दुखते दिलों को दबाकर
तुमने हमसे कहा, 'डटे रहो।'
शुक्रिया नागरिको,
उस रसद के लिए
जो तुमने हमारे सामूहिक भोजनालयों में भेजी।[2]
घबराना नहीं,
उनकी जेलें तोड़ नहीं सकतीं
जुआन कार्लोस ज़राते, रोड्रिगो फिगुएरोवा,
रिकार्डो मार्तम्नेज़ और अलेक्जाण्ड्रो इचेवारिया[3]
और उन जैसे दूसरों को।
हमने महज एक छोटी-सी लड़ाई लड़ी है
सीखने की,
याद करने की
और जुड़ने और जोड़ने की
और तैयारी करने की
और यही छोटी-सी लड़ाई लड़ी है
चीले में सांतियागो, वाल्पारैसो, कंसेप्सियोन
और एरिका के
और बोलीविया में सान्ता क्रुज के
हमारे भाइयों ने।[4]
हम समझने लगे हैं
कि चीजों को अंधेरे से बाहर लाकर
पहचान देना कितना जरूरी है,
कितना जरूरी है
खोई हुई चीजों को
वॉल स्ट्रीट से वापस लाना
अपने जंगलों और अपने नदियों की तलहटी में
और यह जानना कि
हमारी लातिनी दुनिया की जिन्दगी

अंधेरे में खड़ी पत्थर की दीवार नहीं है।
हम कहेंगे उनसे कि
तुम ऐसा नहीं कर सकते,
हमारी दुनिया का रहस्य
तुम्हारी मण्डी में बिकने के लिए नहीं है।
उसे लौटा दो
हमारे जंगलों की बसन्त की फड़फड़ाहट
और प्यारे बूढ़े पतझड़ और स्वप्नों
और पानी के विद्रोह के साथ।
हम समझने लगे हैं
दुनिया की तमाम लड़ाइयों
और पराजयों
और दुरभिसन्धियों को।
यह तो जानते ही थे हम
कि हमें इस बार पीछे हटना होगा।
अभी जो धूल बैठ रही है
चीजों पर,
उसे बैठना ही है
क्योंकि वह उड़ चुकी है।
वह झाड़ी जायेगी
सभी महाद्वीपों की चादरों से
बहुत मेहनत, तरतीब और सलीके के साथ।
फिर एक बार इन्द्रधनुष की
प्रत्यंचा खिंचेगी और छूटेगी
और तीर की तरह यह सदी
एक नई, बड़ी दुनिया में जा गिरेगी।

टिप्पणियां

1. दो अक्टूबर 1968 को सेना ने छात्रों के एक प्रदर्शन पर बर्बर हमला किया जिसमें 60 से ज्यादा नौजवान मारे गये और सैकड़ों घायल हो गये।

2. युनाम पर नौ महीने के कब्जे के दौरान छात्र सामूहिक भोजनालय चलाते थे जिसके लिए अभिभावक, मजदूर यूनियनें और आन्दोलन के शुभचिन्तक हर हफ्ते कई टन खाद्य-सामग्री भेजते थे।

3. सादी वर्दी में पुलिस के लोगों ने बहुत से छात्रों की पिटाई की। इनमें छात्रों के नेता कार्लोस जराटे, रोड्रिगो फिगुएरोवा, रिकार्डो मार्तम्नेज और अलेजान्द्रो इचेवारिया भी शामिल थे।

4. चीले के चार प्रमुख शहरों–सान्तियागो, वाल्पारैसो, कंसेप्सिओन और एरिका में 20 मई 1999 को छात्रों ने और नवम्बर में बोलीविया के सान्ताक्रुज विश्वविद्यालय के छात्रों और शिक्षकों ने शिक्षा पर खर्च में कटौती तथा विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता खत्म करने के विरोध में उग्र प्रदर्शन किये।

मेक्सिको के छात्रों का शानदार, प्रेरक संघर्ष

(पृष्ठ 16 का शेष)

क नाम एक घोषणापत्र'' जारी किया जिसमें कहा गया था—''हम निःशुल्क शिक्षा के लिये और अन्याय के विरुद्ध लड़ना जारी रखेंगे... हमारे लोगों का यह संघर्ष उन घृणित राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्थितियों की परिणति है जिसमें रहने के लिए हमारा देश बाध्य है।''

युनाम के आन्दोलनकारी छात्रों पर हमले से देश भर में विरोध की लहर उठने लगी। उसी रात कैम्पस में 15,000 लोगों का जुलूस निकला। अगले दिन जपाटिस्टा संगठन, मानवाधिकार ग्रुप, क्रान्तिकारी ग्रुप और यूनियनों समेत अस्सी संगठनों ने सीजीएच को अपना समर्थन दिया। बारजों (छोटे किसानों और नई आर्थिक नीतियों से तबाह छोटे व्यापारियों का आन्दोलन) ने छात्रों की रिहाई के लिए राष्ट्रीय स्तर पर मांग उठाई और मेक्सिको तथा अमेरिका की सीमा पर नाकबन्दी करने का ऐलान कर दिया।

संघर्षरत छात्रों के अभिभावकों और मित्रों ने उनकी रिहाई की मांग को लेकर पुलिस स्टेशन के सामने जबर्दस्त प्रदर्शन किया। उनमें से कई तो 1968 के छात्र आन्दोलन के जुझारू नेता थे और इस आन्दोलन ने उनमें पुराने दिनों के संघर्षों की यादें ताजा कर दी थीं।

सीजीएच के बचे सदस्यों ने अपनी छह सूत्रीय मांगों में एक मांग और जोड़ ली—अपने साथियों को रिहा करने की। उन्होंने अपनी मांगों के समर्थन के लिए प्रेस विज्ञप्तियां जारी कीं। विश्वविद्यालय के कुलपति ने हड़ताल के प्रश्न पर विश्वविद्यालय समुदाय को बांटने की चाल चली और अपने पक्ष में साजिशाना ढंग से जनमत संग्रह कराने में सफल रहा। उसकी फरेबी चाल में सत्ताधारी राजनीतिक दल पी.आई.आई. पूरी तौर से साझीदार था। फिर उसने हड़ताल विरोधी छात्रों, शोधकर्ताओं तथा अन्य लोगों को परिसर में घुसा कर हड़ताली छात्रों के विरोध में सभा करने के लिए उकसाया और जानबूझकर पूरे परिसर में एक तनाव का माहौल बनाने की कोशिश की। लेकिन पासा पलट गया। हड़ताल में उतरे छात्रों ने इन हड़ताल विरोधी लोगों को अपनी सभाओं में आमंत्रित किया और अपना पक्ष रखा और अधिकतर मामलों में उन्हें अपने संघर्ष का हमसफर बना लिया। उनके साथ मिलकर उन्होंने अपनी सात सूत्रीय मांगों पर प्रशासन से बातचीत करने के लिए एक संयुक्त घोषणापत्र जारी किया।

'युनाम' के अन्य लोग भी जो पहले कुलपति के झांसे में आकर हड़ताल का विरोध कर रहे थे, उन सभी छात्र-शिक्षक-अभिभावक और 'युनाम' के मेहनतकश लोगों ने अंततः सच्चाई व न्याय का साथ दिया। वे एक आम सभा में इकट्ठा हुए और गिरफ्तार छात्रों की रिहाई और उन्हें आरोपमुक्त करने की मांग को लेकर संगठित होने का निर्णय लिया। इतना ही नहीं उन्होंने कुलपति की साजिश को पहचाना और इसके खिलाफ एक हस्ताक्षर अभियान चलाने का फैसला किया। इसके लिए इस आशय का प्रपत्र तैयार किया गया—''जनमत संग्रह में मेरी भागीदारी एक विश्वास के नाते थी... भागीदारी करने के मेरे निर्णय का यह आशय कतई नहीं कि पुलिस दमन और उत्पीड़न पर मैंने अपनी मुहर लगा दी है।''

'युनाम' के छात्रों की यह हड़ताल वास्तव में मेक्सिको सरकार और उनके साम्राज्यवादी आकाओं की नीतियों के विरुद्ध एक लम्बे फैसलाकुन संघर्ष की तैयारी है। उन आर्थिक नीतियों के विरुद्ध, जिन्होंने आम जनता की जिन्दगी को तबाह-बर्बाद कर दिया है और जो अब निःशुल्क शिक्षा के बुनियादी अधिकार को भी छीन लेना चाहती हैं।

भारत और मेक्सिको में बहुत सी समानताएं हैं। हमारी तरह मेक्सिको भी प्राचीन सभ्यता और कई संस्कृतियों वाला देश है। दोनों ही देशों की जनता देशी शासक वर्गों की लूट-खसोट, भयंकर भ्रष्टाचार और बर्बर दमन की शिकार है। मेक्सिको विदेशी कर्ज के जाल में बुरी तरह फंसा है और भारत के शासक भी इस मकड़जाल में देश को उलझा चुके हैं। दोनों देशों की मेहनतकश जनता पर भूमंडलीकरण के दौर की लुटेरी आर्थिक नीतियों का कहर बरपा हो रहा है। लेकिन दोनों में एक बहुत बड़ा फर्क है। मेक्सिको के छात्र-युवा अपने देश के मजदूरों-किसानों के साथ कंधे से कंधा जोड़कर इन तबाही लाने वाली नीतियों के खिलाफ लम्बी लड़ाई में उतर चुके हैं। पर हमारे देश के नौजवान अभी भ्रम, भटकाव और बिखराव से उबर नहीं पाये हैं। युनाम के हमारे साथियों के संघर्ष की ज्वाला हमें रोशनी दिखा रही है। आओ, उठ खड़े हों! ●